ISSN : 2583-2948

सपने होई भिखारी नृपु

योगेश कुमार मिश्र
हिन्दी अधिकारी भारतीय लेखापरीक्षा
एवं लेखा विभाग (IAAD), गुवाहाटी
मो॰ – 8334806091
ईमेल : yogeshmishra16@gmail.com

कल आठ बज कर बीस मिनट पर मैं 40 वर्ष का हो गया। बहुत लोगों का अनुपम प्रेम,संदेश तथा आशीष मिला। अनुगृहित हूं
यह उपलब्धि है कि आदमी चालीस वर्ष इस धरती पर बीता लिया, अनेक यातना सदृश्य घटना, खुशी के आंसू, गम का खजाना, प्रेम, घृणा, सफलता, असफलता और पता नहीं क्या क्या...
इन सब में , बड़ी बात रही उदासीनता...मैं सब में रहकर मन से निर्लेप रहने का अभ्यास करता रहा। उदासीनता ही मेरी पूंजी है। न ही परेशानियों में बहुत दुखी हुआ और खुशी में तो खुश हुआ ही नहीं।
सारी बातों में मुझे जो अनमोल चीज समझ आई वह यह कि

सपने होई भिखारी नृपु, रंक नाकपति होइ।
जागे लाभु न हानि कछु तिमि प्रपंच जिय जोई ।।92।।

यह संसार स्वप्न मात्र है। यहां हो रही लड़ाई,प्रेम,ईर्ष्या द्वेष ,मान बड़ाई सब क्षणिक है, क्षण भंगुर है, विकारी है। फिर हम कहां दिल लगाए बैठे हैं...हमे कमलवत जीना होगा।
क्षणभंगुर के बदले शाश्वत की तरफ बढ़ना है। सुख हो तो शाश्वत हो, अखंड हो कहीं भी किसी भी स्थिति में इसका अभाव न हो। प्रभु की स्मृति में अखंड आनंद है, इनकी पूजा वंदना में ही जीवन की सार्थकता है बाकी सब मोह,माया ही तो है।
एक बार मैं अपने दुखों के बारे में ,जीवन की विसंगतियों के बारे में सोच रहा था...भीतर में कष्ट पल रहा था... कमता ना था, बढ़ते ही जाता था...फिर सामने बैठे श्री गणेश जी दिखे ...मानो वे कह रहे थे क्या मुझसे अधिक विसंगति में हो....जिसके पिता देवाधिदेव महादेव हैं...जिनकी माता परांबा हैं, जिसका भाई देवसेना का अध्यक्ष है....उसे गजानन बनना पड़ा....जिसके पिता ने ही उसका धड़ काट कर अलग कर दिया हो...लेकिन आज तक तुमने मेरे बारे कभी सुना कि श्री गणेश की माता पिता के प्रति भक्ति में कमी आई हो? मेरी निष्ठा, धर्मपरायणता और कर्तव्य निर्वहन में कोई खोट हुई हो....तुम मेरे भक्त हो कर ऐसे अवसाद में क्यों हो...क्या मुझ पर तुम्हारी आस्था नहीं रही....
ऐसा सुनना था कि आंखे डबडबा गई....हमने उस समय यह भी समझा कि आखिर कुंती भगवान श्री कृष्ण से दुख की याचना क्यों करती है।
दुख चिंतन का सुअवसर प्रदान करता है। ईश्वर से जोड़ता है। व्यक्ति अपने आचरण को परखता है।

गाइए गणपति जगवंदन, संकर सुवन भवानी के नंदन।